M.A. IInd Semester

Paper - Ist (Classical Social Thinker - II)

Subject - Sociology

Topic - Tolcott Parsons.

(Social Action Theory -)

सामाजिक क्रिया सिद्धांत -

Lecture by -

Dr. Pooja Tiwari

~~Assistant~~ Professor,

(H.O.D.)

Department of Sociology

Nehru Gram Bharati

(Deemed to be)

University

Prayagraj.

Scanned with CamScanner

Talcott Parsons – (टॉलकॉट पारसंस) (1902-1979)

'संरचनात्मक प्रकार्यवाद, आदर्शवादी प्रकार्यवाद, व क्रियावादी सिद्धांतकार के रूप में चर्चित प्रसिद्ध अमेरिकी समाजशास्त्री टॉलकॉट पारसंस का जन्म सन् 1902 में अमेरीका में हुआ था।

इन्हें समाजशास्त्र का सिद्धांतवेत्ता कहा जाता है। होमन्स तथा गॉफमैन जैसे समाजशास्त्री जो सिद्धांत के क्षेत्र में काम कर रहे हैं, सब पारसंस की देन हैं। इस प्रकार प्रख्यात अमेरीकी समाजशास्त्री समाजशास्त्र को समृद्ध कर के सन् 1979 में इस दुनिया से चल बसे।

कृतियाँ–

(i) The Structure of Social action (1937)
(ii) Essays on Sociological Theory (1939)
(iii) The Social System (1951)
(iv) The Mordern societies (1971)
(v) Economy and Society, with Smelser (1956)

सामाजिक क्रिया सिद्धांत – (Social action Theory)

पारसंस ने 1937 ई० में प्रकाशित पुस्तक 'The Structure of Social action' में अपने क्रिया सिद्धांत का उल्लेख किया। उन्होंने क्रिया के संदर्भ में वेबर, पैरेटो, रिकार्डो, व एडम स्मिथ जैसे विद्वानों के विचारों को अस्वीकार करते हुए 'क्रिया का स्वैच्छिक सिद्धांत' प्रस्तुत किया।

Scanned with CamScanner

पारसंस के अनुसार :- "सामाजिक क्रिया का सिद्धांत वह क्रिया है - जिसमें कर्ता (Actor) परिस्थिति (situation) तथा अभिप्रेरणा (motivation) आदि सम्मिलित हो।"

इनमें से किसी के अभाव में सामाजिक क्रिया सम्भव नहीं है। अतः पारसंस ने तीन प्रकार के सामाजिक क्रियाओं का उल्लेख किया है —

(i) **अभिव्यंजक सामाजिक क्रियाएँ** → यह क्रिया भावनाओं अर्थात् व्यक्ति के राग, द्वेष, प्रेम, घृणा आदि के आधार पर निर्धारित होती है। इसका उद्देश्य कर्ता हेतु भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त करना होता है।

(ii) **साधात्मक सामाजिक क्रियाएँ** → ये वह क्रियाएं हैं जो कर्ता अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है एवं उपयोग में लाता है। जैसे - UPSC की तैयारी करना साधात्मक सामाजिक क्रिया मानी गयी है।

(iii) **नैतिक सामाजिक क्रियाएँ** - इस क्रिया में व्यक्ति के पाप, पुण्य, या सही-गलत के विचारों से हैं। यह व्यक्ति के आत्मसात से संबंधित है। जैसे - गरीबों की मदद करना, या वृद्धों का सम्मान करना आदि।

Scanned with CamScanner

पारसंस का मानना है कि - कर्त्ता सामाजिक क्रियाएं इसलिए करता है कि - क्योंकि वह अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना चाहता है। इसे निम्न चार्ट द्वारा समझा जा सकता है ——

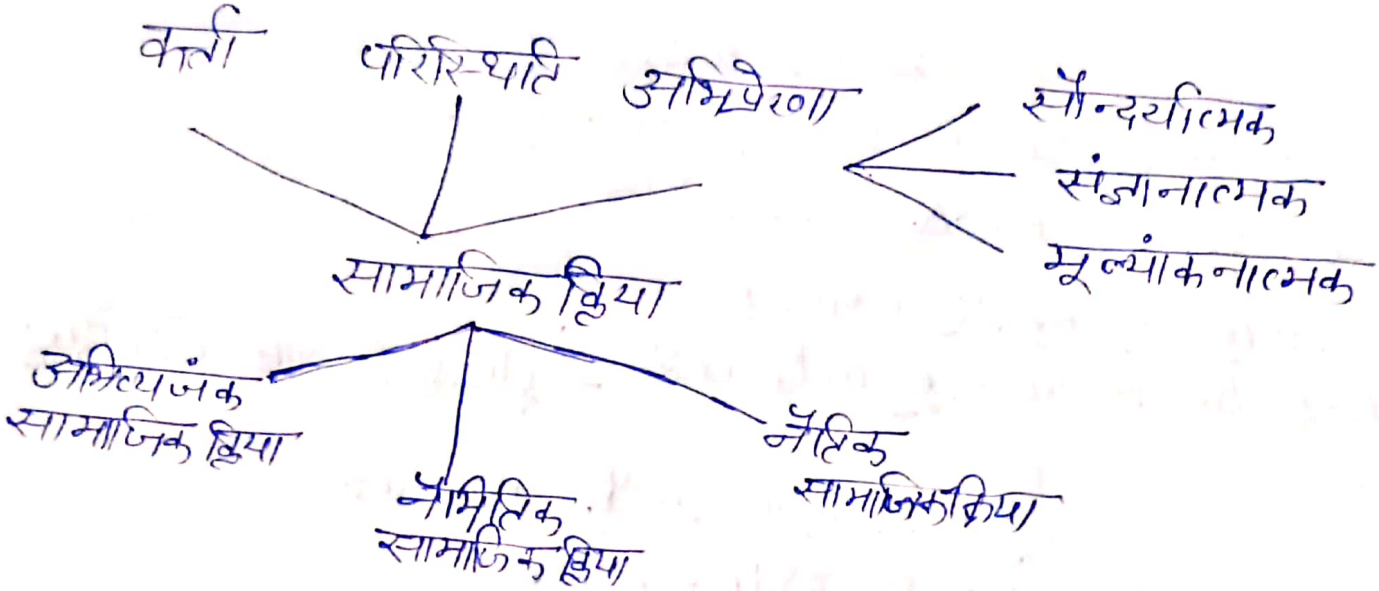

इस प्रकार पारसंस के सिद्धांत को "स्वैच्छिक क्रिया-सिद्धांत (Voluntary Action Theory) कहते हैं।

Scanned with CamScanner